विभाजन का हरियाणा क्षेत्र पर सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक प्रभाव

डॉ. ममता रानी,
विभागाध्यक्षा, राजनीति शास्त्र
बाबू अनन्त राम जनता कॉलेज,
कौल, कैथल।

15 अगस्त 1947 के दिन जहां एक ओर भारत को उपनिवेशिक शासन से स्वतन्त्रता मिली वहीं दूसरी ओर देश का विभाजन हुआ। इस विभाजन का प्रभाव आज तक भी चला आ रहा है। 1965 तथा 1971 के भारत पाक युद्ध तथा कश्मीर में आतंकवाद को इसी परिप्रेक्ष्य में देखा जा सकता है। क्योंकि हरियाणा क्षेत्र उस समय पंजाब प्रान्त का भाग था, विभाजन का हरियाणा पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। इस प्रसंग में प्रस्तावित शोध पत्र में विभाजन का हरियाणा क्षेत्र पर पड़े सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक प्रभावों की व्याख्या और विश्लेषण का प्रयास किया जा रहा है।[1]

विभाजन के पहले और विभाजन के बाद हरियाणा क्षेत्र में साम्प्रदायिक दंगे हुए जबकि पहले यहां हिन्दू और मुसलमान सदियों से भाईचारे की भावना से रह रहे थे। इन दंगों के फलस्वरूप मुसलमानों को भारी जान और माल का नुकसान उठाना पड़ा। मेवात के क्षेत्र को छोड़कर शेष हरियाणा के मुसलमान यहां से पाकिस्तान में पलायन कर गये। दूसरी ओर पश्चिमी पंजाब के क्षेत्र से एक बड़ी संख्या में हिन्दू हरियाणा में शरणार्थियों के रूप में आये।[2] शुरू में उन्हें अलग–अलग शहरों में कैम्पों में रखा गया और फिर थोड़े समय बाद उन्हें सम्पत्ति की अलाटमैंट के द्वारा पुनर्स्थापित किया गया। विभाजन के फलरूवरूप हरियाणा में हिन्दुओं का प्रतिशत बढ़कर लगभग 90 हो गया और मुसलमानों का प्रतिशत घट कर चार रह गया और सिखों की भागीदारी बढ़कर छः प्रतिशत हो गई। जहां हरियाणा में पहले हिन्दी, कौरवी, बांगरू, बॉगड़ी, मेवाती, ब्रज और अहीरवाटी बोलियां बोली जाती थीं, अब यहां पंजाबी की विभिन्न बोलियां जैसे कि मुलतानी, झांगी, बावलपुरी इत्यादि भी बोली जाने लगीं। वस्तुतः एक भाषायी क्षेत्र से हरियाणा दो भाषायी क्षेत्र बन गया। हरियाणवी समाज जहां पहले ग्रामीण–शहरी, जमींदार–गैर जमींदार में विभाजित था, अब लोकल–पंजाबी में बंट गया। पश्चिमी पाकिस्तान से आए पंजाबियों ने यहां की जीवन शैली पर बहुत बड़ा प्रभाव डाला। यहां का रहन–सहन, खान–पान और वेशभूषा बदल गये। क्योंकि पाकिस्तान से आकर बसे पंजाबी बहुत ही मेहनती थे और किसी भी काम को करने में शर्म महसूस नहीं करते थे इसीलिए वो फिर से एक समृद्ध वर्ग बन गये। व्यापार में उन्होंने बनियों को पीछे छोड़ दिया, खेती में जाटों और अन्य जातियों को। आधुनिक व्यवसायों में उन्होंने ब्राह्मणों और बनियों को हाशिए पर लगा दिया।[3]

उद्यमी होने के कारण इन्होंने नये उद्योग लगाये और कृषि प्रधान हरियाणा में औद्योगिकरण की प्रक्रिया शुरू हुई। यमुना नगर, सोनीपत, पानीपत और फरीदाबाद का औद्योगिकी केन्द्र बनाने का श्रेय

पंजाबियों को ही दिया जा सकता है। हरित क्रान्ति का श्रेय भी एक बड़ी सीमा तक पश्चिमी पाकिस्तान से आये सिख किसानों को दिया जा सकता है। कुल मिलाकर ये कह सकते हैं कि परम्परा से मुक्त पंजाबी वर्ग ने हरियाणा के विकास में अति महत्त्वपूर्ण योगदान दिया और बाद में स्थानीय लोगों ने भी उनका अनुकरण किया।[4]

हरियाणा क्षेत्र की राजनीति पर भी विभाजन का प्रभाव पड़े बगैर नहीं रह सका। सर्वप्रथम तो यहां जमींदारी पार्टी की स्थिति कमजोर हुई और कांग्रेस का प्रभाव बढ़ा और पंजाबियों के समर्थन से जनसंघ भी एक महत्त्वपूर्ण शक्ति के रूप में उभरा।

दूसरे हरियाणा में धरती पुत्र का सिद्धान्त पैदा हुआ।[5] कुछ संकीर्ण सोच के लोगों ने पंजाबियों की उन्नति को देखकर उनसे ईर्ष्या करनी शुरू की और उन्हें रिफयूजी ही नहीं पाकिस्तानी भी कहना शुरू कर दिया। 1953 में हरियाणा राज्य की मांग की उत्पत्ति को भी हम इस परिप्रेक्ष्य में देख सकते हैं। हरियाणा के कुछ लोगों के दिल में ये आशंका पैदा हो गई कि ये क्षेत्र पंजाबियों के आन्तरिक उपनिवेशवाद का शिकार हो गया है। यह भावना भी उठी कि आर्थिक विकास में और नौकरियों की भर्ती में पंजाब सरकार के द्वारा हरियाणा क्षेत्र के लोगों के साथ भेदभाव किया जा रहा है।

सच्चर फार्मूले के आधार पर पांचवीं कक्षा से पंजाबी पढ़ने की अनिवार्यता ने यहां 1957 में हिन्दी रक्षा आन्दोलन की उत्पत्ति में योगदान दिया और ये मांग की गई कि इस भाषा की अनिवार्यता को हिन्दी भाषी क्षेत्र में समाप्त किया जाए। हिन्दी सत्याग्रह में हरियाणा क्षेत्र की भागीदारी को इसी परिप्रेक्ष्य में देखा जा सकता है तथा 1965 में हरियाणा की मांग फिर से खड़े होने को भी हम विभाजन के प्रभाव के रूप में देख सकते हैं।[6]

हरियाणा क्षेत्र पर विभाजन के बाद बसे पंजाबियों ने अच्छे और बुरे दोनों प्रंकार के सामाजिक प्रभाव डाले। अच्छे प्रभावों में हम ये मान सकते हैं कि यहाँ के लोगों को एक बड़ी सीमा तक साफ रहना, साबुन से नहाना और साफ कपड़े पहनना पंजाबियों ने सिखाया। हरियाणा के खान–पान को भी पंजाबियों ने बदल दिया। पहले यहाँ कहा जाता था 'देशों में देश हरियाणा जित दूध दही का खाना'', अब इसकी बजाय अंडे और मांस खाने का प्रचलन हुआ। पहले बीड़ी और हुक्का पीने का रिवाज था अब सिगरेट और शराब पीने का चलन हो गया।[7]

हरियाणा की वेशभूषा भी बदल गई। पहले हरियाणा के पुरुष धोती पहनते थे और सिर पर पगड़ी बांधते थे। अब धोती की जगह तहमद (तंबा) ने ली ली और पगड़ी की बजाय पुरुषों ने नंगे सिर रहना शुरू कर दिया। महिलाओं ने चोली–घाघरा छोड़कर सलवार–कमीज पहनना शुरू किया। बाल बनाने का ढंग भी बदल गया। मिंढी बनाने की बजाय अब एक या दो चोटियां और जूड़ा बनाने का फैशन हो गया। महिलाओं ने पंजाबियों की तरह सजना शुरू किया। अब वे भी घरों से बाहर भी काम करने लगी हैं।

उनका पुरुषों से बातचीत करने में संकोच भी कम हुआ है। पंजाबी लड़कियों की नकल करते हुए हरियाणा की लड़कियों ने भी स्कूलों और कॉलेजों में जाना शुरू किया। पुरुषों और महिलाओं दोनों की सोच पर भी पंजाबियों का बहुत प्रभाव पड़ा।[8]

एक तरफ सोच में खुलापन आया और संकीर्णता कम हुई तो दूसरी ओर सच्चाई औ ईमानदारी भी कम हो गई। झूठ तथा चालाकी बढ़ गई। गौरतलब है कि हरियाणा में बसे पंजाबी वर्ग अपने घर बार छोड़ने के साथ पाकिस्तान में अपनी परम्परा को भी छोड़ दिया था। ब्याह–शादियों में डी.जे का प्रयोग, पुरुषों और महिलाओं का उनमें नाचना इसी परिप्रेक्ष्य में देखा जाता है। हरियाणा में इससे पहले पुरुष नहीं नाचते थे। महिलाएं नाचती तो थीं लेकिन घर की चारदीवारी में पर पुरुषों के सामने नहीं।[9]

हरियाणा क्षेत्र में सांगों और रागनियों का महत्त्व भी कम हुआ। उनकी बजाय यहां पंजाबी गाने लोकप्रिय हो गये। हरियाणा में भजनीकों और उपदेशकों का प्रभाव भी कम हुआ। यहां के परम्परागत त्यौहार और मेले भी अपनी लोकप्रियता खो बैठे। दूसरे शब्दों में हरियाणा की संस्कृति का एक बड़ी सीमा तक पंजाबीकरण हो गया।[10]

हरियाणा में पंजाबियों के बसने का प्रभाव यहां के लघु संस्कृति पर भी पड़ा। नगर देवता, गांव देवता, भैयां आदि की पूजा धीरे–धीरे खत्म हो गई और उसका स्थान बड़ी संस्कृति ने ले लिया। यहां देवियों के जगराते और शनि की पूजा शुरू हो गई और ग्रामीणों ने भी शहरों की उच्च जातियों की तरह पूजा–पाठ करना शुरू किया।

सबसे महत्त्वपूर्ण प्रभाव हरियाणा के आर्य समाज आन्दोलन पर पड़ा। संध्या हवन आदि को छोड़कर पंजाबियों की तरह हरियाणा वालों ने भी सनातन धर्म की विधि अपना लीं। यह कहना गलत नहीं होगा कि हरियाणा में आर्यसमाज को हाशियों पर लगाने में पंजाबियों का बहुत बड़ा हाथ रहा। दूसरी तरफ पंजाबियों को हम इस बात का श्रेय दे सकते हैं कि उन्होंने हरियाणा को एक परम्परागत समाज से एक आधुनिक समाज बना दिया।[11]

विभाजन का प्रभाव यहां की अर्थव्यवस्था पर भी पड़ा क्योंकि पंजाबी पश्चिमी पंजाब के ऐसे विकसित क्षेत्र से आये थे जहां व्यापार, उद्योग तथा खेती तीनों ही बहुत विकसित थे। हरियाणा के बनियों ने भी पंजाबियों का अनुकरण किया और व्यापार के क्षेत्र में आगे बढ़ना शुरू किया। लेकिन व्यापार में वे पंजाबियों से पीछे रह गये। हरियाणा के वैश्यों ने पंजाबियों का अनुकरण करते हुए आधुनिक उद्योग भी लगाने शुरू किये लेकिन इनमें भी वे पंजाबियों का मुकाबला नहीं कर पाये। आधुनिक व्यवसाय जैसे वकालत, चिकित्सा और सरकारी नौकरियों में हरियाणा की उच्च जातियों का वर्चस्व पंजाबियों ने खत्म कर दिया। गौरतलब है कि पंजाब में सरकारी नौकरी लेने के लिए पंजाबी भाषा का ज्ञान अनिवार्य था क्योंकिं यहां के स्थानीय लोगों ने दसवीं कक्षा तक पंजाबी नहीं पढ़ी होती थी, इसलिए वो सरकारी

नौकरियों से वंचित रह जाते थे। पंजाब सरकार का भी रवैया पंजाबियों का पक्ष करने का था और स्थानीय लोगों के साथ भेदभाव। इन्हीं कारणों से ही हरियाणा के समाज में लोकल–पंजाबी विवाद शुरू हुआ।[12]

उपरोक्त प्रसंग में हमें यह बात स्वीकारनी होगी कि हरियाणा के लोगों को आधुनिक खेती भी पंजाबियों ने सिखाई। पहले यहां परम्परागत ढंग से खेती होती थी और खेती की बजाय पशुपालन पर अधिक जोर था। जमीन की जुताई बैलों के द्वारा की जाती थी और अनाज परम्परागत ढंग से पैरों में से निकाला जाता था। ढोने का काम भी बैल गाड़ियों से किया जाता था। पंजाबियों का अनुकरण करते हुए स्थानीय लोगों ने ट्रैक्टर और अन्य मशीनों का इस्तेमाल, आधुनिक बीजों का और कृत्रिम खाद का इस्तेमाल शुरू किया। इसमें संदेह नहीं कि हरियाणा में आई हरित क्रान्ति एक बड़ी सीमा तक पंजाबियों की देन है। विशेषतौर पर पाकिस्तान से आकर बसे सिक्ख किसानों ने यहां की खेती में क्रान्तिकारी भूमिका निभाने का कार्य किया है।

हरियाणा की राजनीति पर भी विभाजन का बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा है। जैसा कि अमेरिकन विद्वान पॉलवालिस ने बतलाया है कि पहले यहां की राजनीति में ग्रामीण–शहरी, और जमींदार–गैर जमींदार के सवाल महत्त्वपूर्ण थे। कांग्रेस पार्टी को ब्राह्मण और बनिये समर्थन देते थे। यूनियनिस्ट पार्टी को, जिसे जमींदारा लीग भी कहा जाता था, खेती करने वाली जातियों और खास तौर पर जाटों का समर्थन प्राप्त था। पिछड़ी जातियां और अनुसूचित जातियां उस समय हाशिये पर थीं। लेकिन विभाजन के बाद उच्च जातियों और पिछड़ी जातियों और अनुसूचित जातियों के समर्थन के कारण कांग्रेस का प्रभाव बढ़ गया। दूसरी तरफ जमींदार लीग का आधार सिकुड़ गया। तीसरी तरफ पंजाबियों के समर्थन के कारण जनसंघ भी एक महत्त्वपूर्ण राजनैतिक दल के रूप में उभरा।[13]

गौरतलब है कि पंजाब सरकार में भी हरियाणा की भागीदारी बहुत कम थी। इस क्षेत्र से एक या दो मन्त्री ही पंजाब सरकार में होते थे। इसीलिए हरियाणा के स्थानीय लोगों ने 1953 में हरियाणा राज्य की मांग की जब कि हरियाणे के पंजाबियों ने महापंजाब का समर्थन किया। इस मांग में ये कहा गया था कि पंजाब, हिमाचल प्रदेश, पेप्सू और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कुछ भागों को मिलाकर महापंजाब बनाया जाए। वस्तुतः महापंजाब की मांग पंजाबी सूबे और हरियाणा प्रांत की मांगों के खिलाफ पंजाबी हिन्दुओं ने उठाई थी।[14]

1956 में जब क्षेत्रीय फार्मूला बना और पंजाब को पंजाबी और हिन्दी क्षेत्रों में बांट दिया गया था तो पंजाबियों ने इसका घोर विरोध किया और स्थानीय लोगों ने इसे समर्थन दिया। लेकिन 1957 के बाद हरियाणा के आर्यसमाजियों और जनसंघ ने 'हिन्दी रक्षा' आन्दोलन शुरू किया। इसमें यह मांग की गई कि पंजाबी भाषा की शिक्षा की अनिवार्यता खत्म की जाए। इस आन्दोलन में हरियाणा के लोकल और पंजाबी दोनों वर्गों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया।[15]

यद्यपि हिन्दी रक्षा आन्दोलन पंजाबी और हिन्दी क्षेत्रों में पंजाबी की शिक्षा की अनिवार्यता तो खत्म नहीं करा पाया, इससे हरियाणा और पंजाबी क्षेत्री दोनों में साम्प्रदायिकता बढ़ गई। अकाली दल ने फिर से पंजाबी सूबे की मांग उठाई और हरियाणा के लोकलों ने हरियाणा राज्य के निर्माण की। किन्तु हरियाणा के पंजाबियों ने इन दोनों का विरोध किया जिस दिन (9 नवम्बर 1996) पंजाबी सूबे और हरियाणा राज्य के निर्माण की घोषणा हुई तो हरियाणा के पंजाबियों ने उसके विरुद्ध एक हिंसात्मक आन्दोलन किया लेकिन हरियाणा का अलग राज्य बन जाने के बाद पंजाबियों ने हरियाणा के हितों की रक्षा के लिए काम करना शुरू किया।[16]

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंच सकते हैं कि पंजाब के विभाजन का हरियाणा क्षेत्र पर गहरा प्रभाव पड़ा। यहां की सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था और राजनीति इस प्रभाव से अनछूये नहीं रह सके। केवल एक ही बचाव रहा कि जातिवाद के प्रभाव के कारण यहां लोकल पंजाबी विवाद कमजोर हो गया और उसकी बजाय हरियाणा की राजनीति में जाट–गैर जाट का सवाल अधिक महत्त्वपूर्ण हो गया। जाटों के प्रभुत्व को सीमित करने के लिए पंजाबियों में एक सामाजिक और राजनैतिक गठबंधन बनाने का प्रयास किया जिसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह के प्रभाव देखने को मिले हैं।

संदर्भ

1. For details, refer to Sushma Rani Kamboj, (1996) 'Sons of the Soil Theory, A threat to National Integration', Ph.D. Thesis (Unpublished) Department of Political Science, Kurukshetra University, Kurukshetra, 1996.
2. These observations are based on my discussion with Prof. Ranbir Singh, a well known specialist on Haryana Politics, at Karnal.
3. K.C. Yadav (1981), Haryana Ke Ithas, Bhag 3, New Delhi
4. Ibid
5. J.R. Siwach (1990), Dynamics of Indian Government and Politics, New Delhi, p 70
6. K.C. Yadav, op. cit., pp 238-241
7. Ibid, pp 230-232-235
8. Ibid, pp 232-235
9. Ibid
10. Ibid
11. Anupma Arya (1998), Religion and Politics in India, The Role of Arya Samaj in the Politics of Punbaj & Haryana, New Delhi
12. Ibid
13. Baldev Raj Nayan (1966), Minority Politics in Punjab, New Jersy
14. Ibid
15. K.C. Yadav, op. cit., pp 242-246
16. Anumpa Arya, op. cit.